काया नगर मझारा रे हंसला जिण खोज्या निस्तारा

लागी लगन हिये बिच गहरी
कोन है मेटण वाला
मस्तक ऊपर लिखी फकीरी
लेख लिख्या करतारा

सिंह और स्यार दोनूँ रहता वन म
चरता न्यारा न्यारा
एक दिन मेळ मिल्यो मछली को
सिंह न स्यार सुधारया

गगन मंडल विच उरद मुख कुआ
बहे अमृत का झारा
सुगरा सुगरा पिव पिव छाक्या
प्यासा जाय गवारां

महर भई जद सतगुरु मिलिया
खोल्या भरम का ताला
जालिमगिरी सतगुरु शरणे
राम भज्या निसतारा